सफेद चिड़ियाँ

सफेद चिड़ियाँ

विनोद चंद्र पांडे



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

सूची

दद्दा को

कोई भी ऊपर जाते एरोप्लेन-से अवसर
जिनसे ऊपर उठ जातीं हैं आँखें
और हम पर तैर जाती वह मीनार
जिसकी छाया में हम तब तक खड़े थे

कोई भी हवा में उड़ आई तान
कोई एकाएक पाई अनुकम्पा
जो हिला छेड़ती हमारे भूले से ध्यान
बादलों से खोलती सूरज को हवा...

कोई भी कृतघ्न न होगा इन्हें भुलाने।

सफेद चिड़ियाँ

नहीं हुआ डाँवाडोल मन
गए दिन के तूफ़ान
फेन की लकीरें खींचते
अब यह कोलाहल हीन सवेरा
जहाज के इर्द गिर्द
फड़फड़ा रहीं
सफेद चिड़ियाँ

पेनीलोपी

पेनीलोपी की कुशलता
पा ली तुम्हारे इस मन ने
रोज रात उधेड़ लिए
वहीं के वही स्वप्न रखने
टेलीमाकुस, कब आएगें पिता
इन दबंग मन की वृत्तियो का जुल्म
. अब नही जाता सहा

जमादार की लड़कियां

सुनहरी धूप के गहने सबके
रात भर ठंड में ठिठुर
धूप मे बैठ बढ़ाती नन्हें कर
सूरज चूम दे देता चूड़ियां
जमादार की लड़कियां

चांद का सलोनापन उसका भी
जो देर को आखिरी काम से लौटती
चांद एक छाया से सरक
अनूप रूप से देता ढक
जमादार की लड़कियां

री-मॉडल

जरा चुप
मुझे फिर गढ़ने दो
यों चेहरे पर
हाथ रखने दो
बस बस
ये गए आँसू
और आँसुओं के समय
रहना इसी सरल स्नेह में खड़ी
इसी आकृति में गढ़ी

मग्स गेम

वलिष्ठ रोजीदार
आलोचकों ने पाया इन्हें
अधकचरा

कवि सम्मेलनी कोर्स बुक
कवियों ने कहा
लयहीन

हिन्दी में है—कह कर
पढ़ा ही नहीं किसी ने
इनके सिवा

कविता मग्स गेम है
टी० एस० इलिएट ने
सच कहा

बरामदे में

इससे भी आशातीत सुख है!
अजमेर पर घटा और बारिश—
साथ बैठी हो—
बरामदे से देखते हैं

अंधियाला बढ़ गया
तुम्हारे धुंधलाते नख शिख
यों ही पहिचानता रहूँ
या कि बिजली जला दूँ

सुबह

एक बड़ा ओस से भीगा डालिया
रख दिया मस्तक के बीचं
कहाँ बचें इंद्रियाँ!
ये स्पर्श, ये गंध, ये श्वेत भार
फिर ले सो गई नीद
मैंने मन तुम्हारे उजाले से
स्वप्नों में लिया उतार

कॅनाट प्लेस

वाण से छूटे असंख्य तोते
किए हैं आकाश पर आँचल
पीत वर्णा वर्षा की शाम
बारिश रुकी; हम; खोए पश्चिमी बादल

तीस

तीस के करीब करीब
मेरे वर्ष आ गए हैं
कुछ धैर्य इस जीवन से
कुछ प्यार बढ़ा हो
ऐसी बात नहीं है

तीस साल और
कर देंगे साठ
जीवन में लगी,
सोचते हो, खुलेगी
असंतोष की गाँठ !

गहरा

ओछा अविश्वास
आओ पास
गहरा
समय का पानी है

लम्बी लो साँस
पार करने को
अभी
रात बाक़ी है

वसंत

वसंत के शहर भर में
लग गए हैं नए पोस्टर
आवारा सीटीबाज

सब भले आदमी
उसके घूरने पर
बन जाते व्यस्त
लड़कियाँ गिरा लेती आँखें
पति बढ़ कर आ जाते
पत्नियों के पास

आवारा सीटीबाज
न घर न कामकाज
आगया हमारी शरीफ़ सड़क
कसने आवाज

यूकिलिप्टस्

चुम्बन से अलग होते अधर
नींद में मानो देखना
एक दूसरे को
सुख तो था इस तरह का

और अब...अब...
यूकिलिप्टस् के गिरे पत्तों को
तोड़ मरोड़ सूंघना

खेल

चाँद और हमारे बीच
एक डाल है और
पत्तियों की नन्ही अठखेलियाँ
उसे दिखाती और छिपाती

यहाँ से जरा हट कर देखें!
पर यदि हमने आँख हटा ली
सृष्टि में एक खेल कम होगा :
पत्तियों की दिल्लगी!

गाँव

अब भी न आए रखने बात
सड़क से गईं गुर्राती मोटरें
आम के बाग़ हो गए
चाँदनी के आखेट
दिन गया तुम्हारी बाट देखते

चढ गई होगी आधी रात
गाँव की गलियों में गधे
इधर उधर घूमते

अंधा

कटछट, कैंची–परिश्रम, पर
    न पैटर्न का सार्थक उदय;
थक जाता रात तक
    एक विरोध भरा हृदय

इसका कुछ गुण गिनेंगे
    व्यस्त भगवान!
दिनों का व्योरा निल्
    प्रेम का रिक्त स्थान!

वॉयलिन

खुशी के खाली ढोल
हमारी बातों में
दुख ने बजाया था वॉयलिन
रोई रातों में

उतराव

अब तो दुख भी टकसाली
सुख जैसे
जीवन उतर गया

एक तारों का तट
चाँद-सा भरा मन
अब खाली

कितना और बढ़ेगा
जीवन बेमन
दिन के कोरे काज
रात के फीके स्वपन

बीहड़पन

डाक बंगले में बढ़ी घास
बरसात छोड़ गई सीलन
पर सबसे ज्यादा तुम
छोड़ गई बीहड़पन

पैट्रोमैक्स फुफकारता मद्धिम
लगता न किताबों में मन
सबेरे चिड़ियों ने तोड़ी नींद
ले गई चुरा स्वप्न धन

ग़नीमत

एक ही दिन जीना होता है एक दफ़ा
यह गनीमत है
कहीं आ जाते एक साथ
आज-कल-परसों !

दिन उतरते दिल पर
भारी बैलगाड़ी से
एक के बाद एक,
यह गनीमत है !

जैसे

सुबह—

बहुत देर चुप रहने के बाद
कोई बोला हो

लौट आए रंग—

साँस रोके फक़ चेहरे पर
खुशी की उमंग

चिड़ियाँ—

एक दो कर झुंड पर झुंड
आ गई स्मृतियाँ

राजरानी

क्या मेरी कविताएँ
कभी छपेंगी ?
राजरानी बनेंगी ?

किसी के हाथ से इनका
छीनना मुश्किल होगा
कोई रात भर बिजली जला
इन्हें पढ़ेगा ?
भेजेंगीं युवतियाँ इनको
बेचैन-से प्रेमियों को ?

छपेंगी मेरी कविताएँ
मुझे एक नया-सा सुख होगा
जब जब खोलोगी मेरी किताब
मेरा मन तुम्हें देखता होगा

प्रपोजल

गर्व और बुद्धि के दास
इससे ज्यादा हम
न आएगें
प्यार के पास

इस हद से बड़ी गलती को
यही कहीं स्थापित कर दें—
आओ विवाह कर लें

एप्रिल

एप्रिल आ गया
सबसे अप्रिय महीना
इम्तिहानों की लिए छाया

वोर्सटेड के गए जमाने
बुश-शर्ट जीन
 का समय आया

लड़कियों ने फेंक दिए दुशाले
भुजाओं पर ब्लाउज़
 होने लगे काले

धूल की हवा में टूटते पत्ते
मैंने सुना किसी को कहते—
 यह नहीं पतझर
 यह वसंत आया

न्यूरॉटिक

घड़ी की टिक टिक पर
बदलता विचार—
वह मुझसे उदासीन
उसे मुझसे प्यार

सम पर 'हाँ' विषम पर 'नहीं'
कितनी किताबें हैं मेज पर
या ध्यान मे आए पहले
शब्द के कितने अक्षर

फिर फिर पढ़ी चिट्ठियाँ
व्यंजना की मीन-मेख
एक न्यूरॉटिक हृदय में
प्यार की देख रेख!

सैकिंड शो

सरदार ड्राइवर
वह क्यों देखेगा
पीछे कारों को
या हम बेचारों को

रोशनी होती है सिर्फ
स्ट्रीट लैम्प्स के
नीचे आने पर
बाकी अंधकार अवसर

जाती हैं दिल्ली की
छायाएँ
विंड स्क्रीन पर
आ आ कर

यह शाम

बादलों के धब्बों से पीड़ित
यह रात के पास की शाम
बरसती अन्यमनस्क

कुछ देर खड़ा रहा
परे की बत्तियाँ देखता
पर मैं तो किताब छोड़
उठा था पानी पीने सिर्फ़
मुझे क्यों लग गई यह शाम

हम भी

सब से ऊँची शाख
की आखिरी पत्ती
धूप के सुख में
डगमगाती

ओ हृदय
सुबह आँख खोलते ही
कहीं वहाँ उठते
हम भी

यात्री

किसी भी स्टेशन पर कोई
मेरी ओर न भागा
चुपचाप उतरा चाय पीने
जल्दी में मुँह जलाता

गाँव तक जा रही है
एंजिन की वाष्प फुफकार
सीटी किसी को दर्द थी
किसी को ललकार

बंसी

मछली-सी फड़फड़ाती चाल
किसी कमरे में चली जाओ
खिंच रहा है ताँत-सा संबंध
प्रीत अटकी है चली आओ

अजनबी

हम अजनबी हैं
इतिहास की लीक जुदा जुदा
पर इस समय, इस बाग में, यहाँ
हमारे ही बीच
निकली है

शरद पूर्णिमा

आज का मौसम

ऋतु इतनी खुश है
कुछ भी होने देगी
—जैसे मिल जाओ तुम!
अभी हवा में रात की
वारिश का परस है

अच्छा आज भी क्या
वही संयत संकोच
रखोगी मुझसे
इस बिगड़ते-बनते मौसम में
तो बात बदलनी होगी

एक शाम

उसने मुझे छोड़ दिया
जब भाग्य ने छोड़ा
दुख नहीं रखा
न रखी ईर्ष्या

मुझे यहाँ क्या काम
इस बरसती शाम
बैठा होगा वह
किसी किताब में तन्मय

पेज पर उँगली रख
मेरी तरफ़ मुड़ेगा
जिसने नहीं दिया जीवन
एक शाम क्या देगा?

असंतोष

तुम्हारी आँखों में
मैं पंगु हूँ
कुछ अपूर्ण
प्यार से बेठिकाने-क्वाँरा

मैं एक ग्रहण की सी दृष्टि हूँ
आँचल में रख ले जाओ
अपने जीवन का दीप
हवा हूँ—आवारा

पर क्या करूँ ?
निभाया है अपने से असंतोष
जब विरोध हारा

बंदी

कुछ नहीं
सिर्फ एक पापी अहं
निभाया
छोड़ दी राहें
जहाँ यह
न झुक पाया
इस दुर्ग से दीखा
लाल प्यार का डूबता सूरज
चुप रहा
कुछ न कह पाया

ट्रेन से चाँद

कानपुर तक हो गई रात
बढ़ने लगे विस्तर
आखिरी बार पानी पी
सोए जम्हाते यात्री
पाँव फैला कर

तभी कभी निकला चाँद
गोल पूरा
सीकचों के विरुद्ध
कण्ठ अवरुद्ध
एक चुप चेहरा

ग्रीन वुड

माँ बाप की ही बनी रहोगी बोलो
मैंने नई दस्तक दी है
कुछ झनझनाया हो
तो हृदय खोलो

कहीं जाने का जी चाहा हो
लेटने हरी घास में
किसी के पास
तो मेरे साथ हो लो

प्रपोजल (२)

यह सुख कम नहीं है;
बिलकुल विरक्त हो इनसे?
कार में घूमना थकने तक
चाय देना किसी को
किसी को दे डालना
जीवन का सर्वस्व

तीसरा तट

ओरायन पश्चिमी ढाल पर
बिदा से डबडबाया
जमुना से निकलता ऐंड्रोमिडा
एक हार-सा झिलमिलाया

प्यार की मिथ्स फैलीं हैं
आकाश गंगा के दोनो ओर
इस तीसरे तट पर -
अंधेरे में हम विभोर

टेक

मेरे सरल-हृदय अबोध प्रेमी
तुम्हारी बातें उठा देतीं
मेरे ऊपर एक मंदिर का शिखर
एक पवित्रता बस जाती

ये गूंज से भरे घंटे
मुझे न देखो इस तरह
मेरे सरल-हृदय अबोध प्रेमी
आखिर क्या टेक इस शिखर की

पहले

अपने अनुमान से पहले
मेरा अंत हो गया
एक दो प्रेम ने हिलाया
फिर मन सो गया

सपाट

कल का पहाड़ी जीवन
आज का सपाट
मेरे कदमों तक
लहर आया रेगिस्तान

साँझ देखो, साँझ
पीत आकाश में
रुआसी लाल
कैक्टस, बंजर, बाँझ

ट्रेन में

रात भर ट्रेन हिचकोले देती रही
वादल लगा आकाश था
बिजली चमकती रही
जव तव वीच में उचटी नींद
में सो गया
सुख को और पास खींच

फरवरी

कारों में दुबके प्रेमी
चाँदनी की नर्म छायाओं में
कितने धुँधलाते उच्छ्वास
चाँदनी झीनी जाड़ों में

हम भी तो चल रहे थे पास पास
औरों के बीच हँसते हँसते
छू गई कोहनी टकरा गए हाथ
आगे पीछे हटते

चाँदनी चाँदनी चाँदनी
कितने धुँधलाते उच्छ्वास
मरोड़ गई हवा पेड़ों को
सड़क के आस पास

काला मन

मेरा काला मन
फुसफुसाता कभी
"वह इतनी प्रिय
तुम्हें है भी ?

इतने खाली हैं
तुम्हारे दिन
कि वही एक-दो खयाल
तुम बार बार जाते गिन"

मेरा काला मन
पर कितनी देर का
हवा भरे आकाश में
निस्सहाय मेघ-सा

नदी तट

तुम्हारे श्रृंगार को
वह नदी की फुनगी वाली
घास ला दूं
सच कहो
इस तृप्त क्षण
क्या सुन सुखी होगी
सुना दूं

उसके हाथ

उसके छोटे नरम हाथ
समय ने सब जगह भरी वय
रहने दिया इन्हें
बचपन के साथ

ये सफ़ेद गुलाब के जोड़े
मेरे हाथों में पड़े
इनकी बंद मुट्ठियाँ
दो कौड़ियाँ

बूढ़ी माई का बाल

जब तुम कविता कहते
मैं—मेरा मन
बूढ़ी माई के बाल समान
हिलोर पा उड़ते

भटकने आवारा
पा छुटकारा

मैं हल्की हो जाती
गुम हो जाता वज़न
जीवन-वसंत की हवा
अरुणाते फूल-मन

हवाएँ

मानो कुछ नशे में हैं हवाएं
मेंह में रात भर भीगीं
आँचल गिरा लापरवाह
घूमतीं इधर उधर उनींदीं

मेवाड़

मोरचा लगे तालों-सी
काली चट्टानें
किसी के अटल दुर्भाग्य-सी

मेवाड़ गुम हो चुका
ये पद चिह्न लेता
इतिहास का चूरा
रजवाड़ों की चिता
भस्म हो चुकी

ये गूंगे निशान
समय की सवारी
ध्वंसकारी
इधर से जा चुकी

माँग

लाल लक्ष्मण की लकीर
माथे की माँग
चिरौरी का सेतु न जाएगा
उस दूर लंका तक लाँघ

पुनर्जन्म

दूसरा जन्म हुआ
हमारे समय का
चौराहे पर
अरे हम फिर मिल गए!

शाम को कंदील पर रोशनी थी
पुरानी झिझक से तुमने
मेरा हाथ लिया
अरे हम फिर मिल गए!

नरसापुर आंध्र

डाक की गाड़ियों में चढ़ा
जा रहा है मेरा पत्र
जगह जगह हाथ बदल
अपना वही मुख दिखला
नरसापुर आंध्र

मेरी चिट्ठी जल्दी खोलना
उसके तमतमाए मुख पर
शीतल स्नेह का सलोना
हाथ रखना

साथ-सौभाग्य

बदली कजली सुबह
धूप का लजीला रंग
कमरे में घुस आई
सिहरन लिए संग—

चिड़ियों की कानाफूसी
जागी मर्मर मन में
ओ अवसाद ! साथ सौभाग्य
मिट जाने में

हिल स्टेशन

कहीं नहीं
इस शहर में तो नही
मेरी कल्पना में सिर्फ
बादल आए हैं

ठंडा जल भरा परस
उमड़ आए हृदय के
हिल स्टेशन
बीते वरस

जाड़ों की सुबह

सवेरे सवेरे
बड़ी खिड़कियों वाले आफिस
आँख फाड़े
मुँह अंधेरे मुंह अंधेरे
सड़क में पड़ी झड़झड़ाई पत्तियाँ
जमादारनियों के पहले
सवेरे सवेरे
मुँह अँधेरे
मैं जीप से गया देखता
रात से शहर जागता

टूरिस्ट

कभी भावों की भीड़ होती है
कभी शून्य सड़कें
कभी रेगिस्तान

अब तो दुख पर
आँसू बहाने भी नहीं,
चाहता हूँ कष्ट सहकर
सही अंकित कर दूँ
यह शून्य स्थान

कभी तुम भी आओ यहाँ
जीवन की सौ ग्रंथियों से छूट कर
कुछ देर को टूरिस्ट
यहाँ मैं जिया और मरा था
कविताओं से टटोलना
मेरा स्मारक निशान

मुझसे पहले ही कहा था
मां ने, पिता ने
क सुख में मत झाँकना
ंवर की आँख में
त मत डालना

नके रूप में डूबते
द थी ये सब मुझे
चेतावनियाँ

अपने से

गोपनीय, एकांत में
दुहराए खयाल-सी
वदन से ब्लाउज उतारते
यह बिलकुल अपनी बात
किसी से प्यार की

क्या कभी जूड़ा गिराते
रात वत्ती बुझाते
कहने का मन हुआ है
बात प्यार की

•

भँवर

मुझसे पहले ही कहा था
मां ने, पिता ने
एक सुख में मत झाँकना
भंवर की आँख में
आँख मत डालना

उसके रूप में डूबते
याद थी ये सब मुझे
चेतावनियाँ

अपने से

गोपनीय, एकांत में
दुहराए ख़याल-से
वदन से ब्लाउज उतारते
यह विलकुल अपनी वात
किसी से प्यार की

क्या कभी जूड़ा गिराते
रात वत्ती बुझाते
कहने का मन हुआ है
बात प्यार

भँवर

मुझसे पहले ही कहा था
मां ने, पिता ने
एक सुख में मत झांकना
भंवर की आंख में
आंख मत डालना

उसके रूप में डूबते
याद थीं ये सब मुझे
चेतावनियाँ

म्लान

धुंए-सी सलेटी धूल
सुबह को म्लान किए
हवा में तरंगित क्षोभ

रात आंधी एक
हठ करती रही
बेल खींच डाली-
कुछ पेड़ों से शाखें गईं

मन में भी घूम रहे
कुछ थके स्वप्नों के टुकड़े
उदासी रचते

पक्षियों के झुंड-से
उत्तर जा रहे हैं
सफेद सरकते बादल
क्यों कहूँ रुको
काट चुका जीवन के चित्र
न प्रश्न, न हल

म्लान

धुँए-सी सलेटी धूल
सुबह को म्लान किए
हवा में तरंगित क्षोभ

रात आँधी एक
हठ करती रही
बेल खींच डाली
कुछ पेड़ों से शाखें गई

मन में भी घूम रहे
कुछ थके स्वप्नों के टुकड़े
उदासी रचते

आबू में आषाढ़

पक्षियों के झुंड-से
उत्तर जा रहे हैं
सफेद सरकते बादल
क्यों कहूँ रुको
काट चुका जीवन के चित्र
न प्रश्न, न हल

सट्टेबाज

प्यार दीवालिया !
अच्छा हुआ समय में
हमने एकाउंट उससे
ट्रांसफर करा लिया

हमारे इतने उत्तरदायित्व
जिम्मेदारियाँ
उस सट्टेबाज प्यार के पास
कहाँ रहती

राम

वह थे
दौड़े जो सुनकर
गज का चीत्कार
तुम तो उतर आते
निश्चल प्रबल शांत
उनके मन में
ध्यान में रुक जाता अत्याचार
मुझे बस देखो राम

बालकनी

बालकनी पर खड़ी
    तुम्हें पुकारा था जूलिएट
"देखो चाँद धरती के उघड़े मुँह पर
बिदा लेना तुमसे इतना प्रीतिकर
लेता हूँ बिदा दुहरा दुहरा कर"

तुम हँसी—"अरे यह सब क्या"
सच इस बालकनी का मोह था
इसे देख फिर उमड़ा

वालकनी

वालकनी पर खड़ी
    तुम्हें पुकारा था जूलिएट
"देखो चाँद धरती के उघड़े मुँह
बिदा लेना तुमसे इतना प्रीतिक
लेता हूं बिदा दुहरा दुहरा क

तुम हँसी—"अरे यह
सच इस वालकनी का
इसे देख फिर उमड़ा

स्कार्फ

जब मैं कार में सूनी सड़कों पर
चाँद के साथ जाता रहता हूँ
मन एक मुक्ति पा जाता है
मैं तरह तरह की बात सोचता हूँ

साथ की खाली सीट से
बह कर मुझ पर आती हवा
एक मन का स्कार्फ निकल पड़ता है
फड़फड़ाता पर बँधा

मैं नदी-सा बहता जाता हूँ
अचंचल, तन्मय, बेरोक
पाल उठा लेता मेरा मन
सनसनाती हवा खिड़कियों में टोक

मेरे नीचे कार का गहरा स्पंदन
मेरे पीछे भागता पुराना जीवन

स्वप्न

हम किसी पतझर के वन में
वहकते अनिश्चित मन से
तुम झुकीं उठाने
एक भूरी जर्जराई पत्ती

हमारे प्यार का तत्व वैसा ही था
रह गया नष्ट हो
तुम्हारे हाथ में

सैकिंड शो (२)

चाभी निकाली
फेंक दिया बैग
बिजली जलाई-स्विच
से गिर गया हाथ
एक जम्हाई
कपड़े बदलना है
क्रीम मलना है
मेरा यह सत्ताईसवाँ
वर्ष चल रहा है

खँडहर

श्री हीन सम्पदा हीन खंडहर
इतिहास की गोधूलि में
जुगाली कर उठ गया यहाँ से
जीवन का जानवर

नाजुक कमर
मुँह टेढ़ा कर
कोने में फुसफुसा रहे मुसाहिब प्रेत
एक पत्थर गिरा
कलाइयाँ झनझनाती
भाग गईं चाँदी

वी० आई० पी०

चंचल आ रही इस शहर में
म्युनिसपेल्टी की मोटरें
सब सड़कें धो दें
ये उजड़े उजड़े पेड़
पत्तियाँ पहनें
बिजलीघर कुछ ज्यादह तेज
इन स्ट्रीट लैम्पों को
बिजली भेजे
रेस्ट्रां, सिनेमा, किताब वाले
अपना आकर्षण नया कर ले
उदासी पर लग जाएगा प्रतिबंध
जिसे रोना है अभी रो ले
चंचल आ रही इस शहर में

हुड-डाउन

जीप में घूमी हो रात रात भर
हुड-डाउन-खोया सा मन—सितारे देखते
किसी ने दी सिगरेट—ली,
समय की घड़ी-सा आकाश खिसकता
मील पर मील रात में डूबी
जीप का एंजिन बोलता

तब की चुप्पी का अंदाज लगाओ
और उस नैराश्य का जो तब आता

सीमा

तुम्हें किस तरह बाँध सकूंगी?
सुख की सीमा है
तुम्हारी राह में सदा ये
दो उरोजों के शिखर
न तान सकूंगी

पिण्डवाडा

वाद में वना स्टेशन
गाँव से दूर,
वसों से उठती वैठती धूल

इतिहास-शून्य चौराहा
आने 'वालों की जल्दी
रहने वालों की ऊव

गई एक और मालगाड़ी
सदा जीवित सदा मृत
रेडियो गा पड़ा

भोर

आज सोचता था दिल निचुड़ा होगा
कल रात बीती थी तुम्हारे वक्ष पर हाथ रखे
रात भर एक साँस-सी कोमलता नीचे
मैं सोचता था सवेरा फीका होगा

जो कुछ भुलाया था उठ आया होगा
मेरा तुम्हारा सामंजस्यहीन स्वार्थ
एक कठोर पत्थर-सा पदार्थ
ज्वार के जाते ही चट्टान-सा दीखता होगा

पर सवेरे तुम्हारी ऊबी अँगड़ाई नहीं थी
एक व्यस्त पहिनती भूली व्यस्तता
कुछ चिह्न न रह जाने की सतर्कता
घबरा कर जरूर आँख खुली थी

पर स्निग्धता भरी भोर कमरे में थी
किसी माँ के करुण शीतल हाथों-सी

मिलन

मोल का मुंह रहा
जब तक नहीं छुआ
फिर एक फूल ने
गहरी सांस ली
और खुला
वही मेरे ओठों के नीचे थी सुगंध—

शहनाई न हुई हो बंद
सवेरे के बासी क्षण
वर ने वधू से दुहराया प्रण

सवेरे छलकते तारे
रात भर रोशनी उठाए हारे
बारात जा चुकी सोने
वर वधू मिले गंभीर होने

आराध्य घड़ी

शाम मेरी खिड़की पर
परदे सरीखी उड़ रही है
रेशम सी फैल गई है
गुनगुनाहट उठाओ मन की
यह आराध्य घड़ी आ गई है

अब

इतने दिन तुमसे मिला नहीं
चौंक पड़ता हूँ कभी कभी
कुछ दूर जा आता है ध्यान
इस शहर में तो है ही नही
अब तुम्हारा मकान

बेनडरमीअर

ताल के चुप्पी डाले जल पर
निखरता देखा चाँद
यह रूप अब भी कोमल है
कितनी कल्पनाओं के हंस
इसमें उतर चुके

सुबह के तोते

एक तोतों का झुंड
बाग में बिखरा
एमरैल्ड्स का टूटा हार

ये अब तब आती
पिक पिक
दुखा जाती हृदय की
पुरानी दिक़

खिड़की

सवेरे सवेरे
सुख से नाचती आँखों-सी
चहचहा उठी
सैकड़ों चिड़ियाँ

विश्व पर धरा
वसंत ने नरम पाँव
मैंने खिड़की खोली
और खुली रहने दी

बिदा

उठा लो लंगर
काट दो संबंध
इस तट ने दिया और वंचित रखा
मोड़ लो अब मुख
नई दिशाओं को

फिर देखेंगे रात को तूफ़ान
या सुबह की वेला की
नर्म उँगलियों-सी लहरें
जाते पश्चिम रोकेंगे हमें
खाड़ी के काले-बदन मछुए

रात

रात का रूँधा गला
रुलाई-सी हवा
सिसकियाँ और साँस
अब यह अब बोली वह दिशा

मैं सुनता सो गया
रात का बार बार क्रंदन
मुड़ रहा था तुम्हारी ओर
सन्नाटे में खोया मन

स्वप्न में

बंगलोर में, एक क्लास रूम
पास बैठे हम तुम
तुम एक बेबी को लिए
उलट जा रही हँसी से

लो लो मिलो इससे—मैं निकट
हँसी में कहती अटक अटक

हँसी से उजला मुख
हँसी में हिला वक्ष
तुम और तुम्हारी हँसी—
वही थी वही

संशय

बाहर यह
चाँदनी है
या सवेरा

कान लगाए रहो
कोई बोलगा
मुर्गा या चिड़ियाँ

मुझे फिर नींद
आ रही है
कल बता देना
चाँदनी थी
या सवेरा

सत्रह

जीवन में झूमती टहनी
हरी हरी फिसलती साड़ी
सात समन्दर पार जहाज को
अपनी घरेलू खाड़ी
ऊँचे मस्तूल वाली
लड़कपन से सलोना चेहरा
पहने हँसी का सेहरा
दुबली दम्भवाली
मुझे न देखना फिर
वह हार डालता निहारना
अभी नदी माँ ने जयमाला
कितने कम वर्ष पिरोये हैं तुमने
सुनो, हँसना-हँसाना
खेलते रहना